# अध्याय - 9

| 1. | **प्रार्थना** |
|---|---|

**दल के अगुवेः** प्रार्थना करें और अपने दल और इस पाठ्यक्रम को परमेश्वर को समर्पित करें कि वे प्रभु के लिए अनेक चेले बना सकें।

| 2. | **आराधना** (20 मिनट) | ***(परमेश्वर के विशिष्ट गुण)*** **परमेश्वर प्रेम है** |
|---|---|---|

**<u>परिभाषा</u>**

आराधना क्या है? "आराधना" की परिभाषा है:

**आराधना वह अभिव्यक्ति है जो हमारी परमेश्वर के प्रति उपासना, समर्पण और निष्ठा को प्रकट करती है। जो हम अपनी भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और अपनी प्रति दिन की जीवन शैली से प्रकट करते हैं।**

परमेश्वर की आराधना करने के लिए, हमें ज़रूरत है कि हम अपने परमेश्वर को जान लें कि हमारा परमेश्वर कौन है। हर आराधना के समय हम परमेश्वर के केवल एक ही विशिष्ट गुण को जान सकते हैं।

**<u>मनन करनाः</u>**

**पढ़े या शिक्षा देः** "परमेश्वर प्रेम है।"की शिक्षा दें।

**<u>1. परमेश्वर का स्वभाव प्रेम है।</u>**

**पढ़ेः** यशायाह 43:2; रोमियो 5:8-10 परेश्वर हम से किस रीति से प्रेम करता है?

- **परमेश्वर संसार के लोगों से एक जीवन बचाने वाले के रूप में प्रेम करता है।**

एक जीवन बचाने वाला बाढ़ के पानी में कूद कर, या जलते हुए घर की आग में घुस कर अपनी जान को खतरे में डाल कर दूसरे लोगों की जान बचाता है। लाल समुन्दर की बाढ़ का पानी चिन्ह है परमेश्वर को न मानने वाले दुष्ट राष्ट्रों का जो पूरे संसार में फैले हैं। (यशायाह 17: 12-13) वह आग की भट्टी जिस में दानिएल के तीन मित्रों को फेंका गया था चिन्ह है मसीहों के सताव का।

- **परमेश्वर संसार के लोगों को एक चरवाहे के समान प्रेम करता है।**

एक चरवाहा अपनी खोई हुई भेड़ को तब तक ढूँढता रहता है जब तक वह मिल नहीं जाती है।

- **परमेश्वर हम से एक माता और पिता के समान प्रेम करता है।**

परमेश्वर एक माता के समान प्रेम करता है जैसे माता अपने बच्चो की देखभाल करती है, उनकी रक्षा करती है उनको खाती पिलाती है और उनको पढ़ाती लिखाती है

- **परमेश्वर हम से ऐसे प्रेम करता है जैसे एक मित्र प्रेम करता है।**

एक मित्र की इच्छा रहती है कि वह अपने मित्र के साथ रहे और उसके साथ मिल कर कुछ अच्छा करे।

- **परन्तु सब से अधिक परमेश्वर हमें से अपना बलिदान देकर प्रेम करता है।**

परमेश्वर अपने निज बलिदान के द्वारा अपने प्रेम को साबित करता है इस बात से कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस पर हमारे लिए बलिदान करने को दिया था। उसने यह निज बलिदान इस लिए किया था कि हमें पाप से और अनन्त नाश से बचा सके। परमेश्वर ने यीशु मसीह को हमारे पापों का पश्चाताप करने का अभिषेक करके भेजा था। अर्थात क्रूस पर उसकी मृत्यु के कारण यीशु मसीह ने परमेश्वर के धार्मिक क्रोध को जो हमारे पापों के विरुद्ध था उसे शान्त कर दिया था। उसने हमारे पापों को दूर करके हमे परमेश्वर से मिला दिया था।

**2. परमेश्वर ने हम से पहले प्रेम कया था।**

**पढ़ेः** 1 युहन्ना 4:7-21 परमेश्वर सदा से हमारे प्रति अपने विचारों और योजनाओं में प्रथम रहा है।

- **संसार की सृष्टि के पहले से**

परमेश्वर हम से प्रेम करता था और वह दृड़ता से चाहता था कि हम उसके धार्मिक पुत्र और पुत्रियाँ बने। (इफि.1:4-5)

- **हमारे जन्म से पहले से**

परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा था कि वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मारा जाए।

- **इससे पहले कि हम उसके विषय में कुछ सुनते**

परमेश्वर ने निर्णय लिया कि वह हम तक पहुँचेगा और उसने लोगों को हमारे पास प्रचार करने के लिए भेजा था। (रोमियो 10:14-17)

- **यीशु मसीह को ग्रहण करने से पहले से ही**

परमेश्वर ने हमारे दिलों में काम किया जिससे हम सुसमाचार को सुने और समझें। (युहन्ना 16:8) परमेश्वर ने हमसे इसलिए पहले प्रेम किया था क्योंकि वह चाहते थे कि वह हमे जीत सके। और अब जब उसने हमें जीत लिया है और हम ने उसे ग्रहण कर लिया है तो हम भी बदले में उसे अपना प्रेम दिखा सकते हैं। परमेश्वर नहीं चाहते हैं कि केवल हम अकेले ही उससे प्रेम करे वरन वह चाहते हैं कि हम सब जो उसकी संतान हैं बदले में उससे प्रेम करें और साथ ही एक दूसरे से वैसा ही प्रेम करें जैसा उसने हम से किया है। (मरकुस 12:30-31) जब हम यीशु मसीह को ग्रहण कर लेते हैं और उस पर विश्वास करने लगते हैं तब हमारे अन्दर परमेश्वर का भय समाप्त हो जाता है। यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद सज़ा का कोई भय नहीं रहता है (विशेष रूप से नरक की सज़ा का) लेकिन परमेश्वर मे जीने, उससे प्रेम करने और एक दूसरे से प्रेम करने से हमारा न्याय के दिन पर आत्मविश्वास बढ़ जाता है। (1 युहन्ना 4:17-18)

| **यीशु से पहले** | **यीशु के समय** | **यीशु के बाद** |
|---|---|---|
| * हम विश्वास नहीं करते हैं | * उसने हम पर परमेश्वर की और हमारी सच्चाई को प्रकट को प्रकट किया था। | * हम विश्वास करते हैं (उसे अपना मान लेते हैं।) |
| * हम परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं (रोमियो 1:18) | * यीशु ने पश्चाताप के द्वारा परमेश्वर के पवित्र क्रोध को शान्त (1 युहन्ना4:10) किया और हमारा परमेश्वर के साथ मेल कराया। (रोमियो 5:9-10) | * अब हम परमेश्वर के प्रेम के अधीन है। (1 युहन्ना 3:**1)** और हमें यह अनुभव कराया कि उसने हम से पहले प्रेम किया और वह सदा करता रहेगा। |
| * हम परमेश्वर के श्राप के अधीन हैं। (गला.3:10) | * यीशु ने खुद श्राप बन कर हमें छुटकारा दिया है। (गला. 3:13) | * हम परमेश्वर की आशीषों के अधीन हैं।(गलातियों 3:14, इफिसियों 1:3) |
| हम परमेश्वर की सज़ा के प्रति भय रखते हैं। (1 युहन्ना 4:17-18) | | * हमें न्याय के दिन पर भरोसा रखते हैं। (1 युहन्ना 4:17-18) |
| * हम पापी और खोए हुए लोग हैं। (लूका 5:31-33; 19:10 | | * हमें खोजा और बचाया जा चुका है। (लूका 15:24) |

केवल क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु, और पुनरोत्थान ही हमें परमेश्वर के धार्मिक और न्यायी क्रोध को दूर करके हमें उसकी धार्मिक दया और प्रेम से मिला देता है।

**3. परमेश्वर हमें अनन्त प्रेम करता है।**

**पढ़ेः** यर्मियाह 31:3;रोमियो 8:39 - परमेश्वर आज भी हमसे उतना ही प्रेम करता है जितना वह आदिकाल से हम से करता आया है। और वह कल भी हम से उतना ही प्रेम करेगा जितना उसने अतीत में क्रूस पर हम से किया था। परमेश्वर का प्रेम कभी भी डगमगाता नहीं है और न ही अधिक या कम होता है, जैसा कि अकसर मनुष्य का प्रेम होता है। जो परिस्थितियों और भावनाओं के अनुसार अधिक और कम हो जाता है। लेकिन परमेश्वर का प्रेम अनन्तकाल के लिए निरन्तर बना रहता है। कुछ भी ऐसा नहीं है जो मुझे परमेश्वर के प्रेम से अलग कर दे जो कि मेरा प्रभु यीशु मसीह है।

**4. परमेश्वर का प्रेम हमें बदल देता है।**

**पढ़ेः** रोमियो 5:5 परमेश्वर का प्रेम केवल हमारी भावनाओं को नहीं छूता है लेकिन वह तो हमारे जीवन को ही बदल डालता है। उसका प्रेम हमें उससे और एक दूसरे से प्रेम करने कारण बन जाता है। वह उन लोगों से भी प्रेम करना सिखा देता है जिन्हें हम प्रेम के लायक नहीं समझते है या जो हमारे शत्रु हैं। कटु सत्य तो यह है कि हम उससे इसलिए प्रेम कर सकते हैं क्योंकि उसने पहले हम से प्रेम किया है। उसने तो अपना प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया है। रोमियो 5:5 कहता है, "परमेश्वर ने अपना प्रेम उस पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे हृदय में उँडेल दिया है जो उसने हमें दी है।" प्रेम का मूल जन्म स्थान हमारा हृदय नहीं है। प्रेम तो केवल परमेश्वर की ओर से आता है। (1 युहन्ना 4:7) परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है और वही इस संसार में प्रेम का एकमात्र स्रोत है।

**आराधना**

परमेश्वर के गुण और प्रेम में होकर आराधना करें। तीन लोगों के छोटे समूह में आराधना करें।

| | | |
|---|---|---|
| **3.** | **गवाही बाँटना** (20 मिनट) | ***[शान्त समय]***<br>**युहन्ना 1:1 - 4:22** |

**बारी-बारी वचन बाँटें या निज नोट्स से पढ़ेः** संक्षेप में जो कुछ भी आपने परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में, उस लेखाँश से जो आप को दिया गया है उससे सीखा है उसे सबके साथ बाँटें।युहन्ना 1:1 - 4:22) जो भी गवाही बाँट रहा है उसे गम्भीरता से सुनें और ग्रहण करें। जो वह बाँट रहा है उस पर बहस न करें।

| | | |
|---|---|---|
| **4.** | **बाइबल शिक्षा** (70 मिनट) | ***आज्ञाकारिता***<br>**बढ़होतरी का अध्ययन** |

## क. बढ़ोतरी की ज़िम्मेदारी

धार्मिक बढ़ोतरी के लिए कौन ज़िम्मेदार है? मरकुस के सुसमाचार 4 में लिखे दो दृष्टान्त इस प्रश्न का उत्तर देते हैं।

**1. बीज बोने वाले का दृष्टान्त**

**फल लाने और आत्मिक उन्नति का ज़िम्मेदार कौन है?**

**पढ़ेः** मरकुस 4:1-20 (मत्ती 13:3-23; लूका 8:4-15)

**नोट्सः** बीज तो परमेश्वर का वचन है। (लूका 8:11) विशेष रूप से परमेश्वर के राज्य का संदेश (मत्ती 13:19) मिट्टी मनुष्य के दिल की हालत को और उसके व्यवहार को दर्शाती है। (मत्ती 13:19;लूका 8:12)

**वह बीज जो सड़क के किनारे पर गिरा थाः**

यह तस्वीर है एक ऐसे दिल की जो प्रतिक्रिया नहीं दिखाता है वह एक नासमझ और कठोर हृदय को दर्शाता है। जब आपका दिल इस प्रकार की प्रतिक्रिया या व्यवहार दिखाता है तब आप परमेश्वर के वचन के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं

दर्शाते हैं। आप लगातार एक ही बात सोचते रहते हैं और वह यह है कि परमेश्वर के वचन में कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है। और आप बिलकुल भी कोशिश नहीं करते हैं कि संदेश को समझने का प्रयास करें। (मत्ती 13:19) या फिर अपनी प्रतिक्रिया को बाद के लिए टाल देते हैं। और फिर अन्त में आपका दिल इतना कठोर हो जाता है कि हर बात को ऐसे ही जाने देते हैं। शैतान तो परमेश्वर के वचन की शक्ति को अच्छी तरह से जानता है और वह कोशिश करता रहता है कि उसे दूर से ही छीन लेना चाहता है जिसे आपने ग्रहण नहीं किया है।
वास्तविक शिक्षा यही है कि आप परमेश्वर के वचन को कबूल कर ले (मरकुस 4:20) और जब कभी आप वचन को सुनते हैं, पढ़ते हैं या उसका अध्ययन करते हैं तब हर कोशिश करें कि उसके वचन को समझ सकें (मत्ती 13:23) जब भी वचन को सुने, पढ़ें या उसका अध्ययन करें तुरन्त अपने उदासीनता और शत्रुता के व्यवहार से निबट ले।

**वह बीज जो पथरीली भूमि पर गिरा है**
यह ऐसे हृदय का चित्रण है जो भावुक हैउथला है और जिस की जड़ नहीं है। जब कभी आपके दिल की यह स्थिति या व्यवहार की यह परिस्थिति होती है तब आप परमेश्वर के वचन पर जल्दबाज़ी से प्रतिक्रिया करते हैं। तब आप बिना नतीजे पर ध्यान दिए वचन को ग्रहण कर लेते हैं। शुरू में आप परमेश्वर के वचन से बहुत उत्साहित होते हैं लेकिन जब कठिनाई या सताव आता है तब आप दूर छिटक जाते हैं। आप परिस्थिति के सामने हथियार डाल देते हैं और अपनी बातों से जो भी कुरबानी देने और दुख उठाने का वायदा किया था उससे मुकर जाते हैं।
सही शिक्षा यही है कि आप परमेश्वर के वचन में बने रहें। (लूका 8:15) और कोशिश करते रहना इस विश्वास के साथ वचन पर बने रहे और हर परिस्थिति में परमेश्वर के वचन का पालन करना। अपनी आदत से तुरन्त निबट लें कि परमेश्वर के वचन को सुन कर उसे केवल भावुकता से स्वयं को छूने न दें।

**वह बीज जो कँटीली झाड़ियों मे गिरा था।**
यह तस्वीर है एक ऐसे हृदय की जो पहले से कुछ बातों में उलझा और बँटा हुआ है। जब आपके दिल की यह हालत होती है तब आप परमेश्वर के वचन के अतिरिक्त दूसरी बातों के अनुसार भी प्रक्रियाएँ करते हैं। तब आपकी प्राथमिकताएँ गलत होती हैं। तब आप लगातार जीवन की चिन्ताओं, और धन के धोखे, जीवन में आनन्द देने वाली चीज़ो और अपने मन की इच्छाओं में जो परमेश्वर को पसंद नहीं हैं, फँसे रहते है। आपका मन दो भागों में बँटा रहता है एक ओर सांसारिक बातों में और दूसरी ओर परमेश्वर की बातों में। और तब संसार की बातें परमेश्वर की बातों का गला घोंट देती हैं। और ऐसे में जब मुश्किलें और सताव आता है तब आप परमेश्वर से दूर चले जाते हैं। और अन्त में परमेश्वर का वचन आप के जीवन में कोई फल उत्पन्न नहीं करता है।
मुख्य पाठ यही है कि आप अपने हृदय को साफ इमानदार और अच्छा रखें। (लूका 8:15) उसे अपने जीवन की चिन्ताओं से, धन के धोखे से, संसार के आनन्द से और और अपनी गलत इच्छाओं से दूर रखें। तुरन्त अपनी चिन्ताओ से, अपनी भौतिक(साँसारिक) चीज़ों को प्राप्त करने की इच्छाओं से, और गलत प्राथमिक्ताओं से निबट लें।

**वह बीज जो अच्छी भूमि पर गिरा था**
यह चित्र है एक ऐसे दिल का जो प्रतिक्रिया दर्शाता है, जो दिल में बात संजो कर रखता है, जो सदा तैयार रहता है और जो फलवन्त होता है। जब भी आपके दिल की परिस्थिति या व्यवहार ऐसा होता है तब आप परमेश्वर के वचन पर उस रीति से प्रतिक्रिया करते हैं जैसा यीशु मसीह परमेश्वर की आज्ञा पर करते थे।
पहली तरह की भूमि के विपरीत आप परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, समझते हैं और उसे ग्रहण करते हैं। (मत्ती 13:23, मरकुस 4:20)
दूसरी तरह की भूमि के विपरीत आप परमेश्वर के वचन को सुन कर उसे दिल की गहराई में बसा कर कठिन हालातों में भी उससे चिपटे रहते हैं। (लूका 8:15)
तीसरी भूमि के विपरीत आप अपने दिल को पूरी तरह से उन सब बाते से शुद्ध और आज़ाद रखते हैं जो परमेश्वर के वचन का गला घोंट सकते हैं। (लूका 8:15)
इस तरह आप चौथी तरह की भूमि का होने के कारण कोशिश और मेहनत से फलवन्त हो जाते हैं। (लूका 8:15) कभी आप 30 गुणा फल लाएँगे, तो कभी 60 गुणा और कभी 100 गुणा से भी अधिक फल लाएंगे। (मत्ती 13:23, मरकुस 4:20)

**इस दृष्टान्त का संदेश**
आपके व्यवहार और हृदय की हालत ही निर्णय करती है कि आप परमेश्वर के वचन के प्रति कैसा प्रतिउत्तर देते हैं। और आप का प्रतिउत्तर ही इस बात का फैसला करता है कि आप परमेश्वर के लिए कितना फल लाएँगे। (अर्थात आपका धार्मिक प्रभाव कितना अधिक या कम है।)

## 2. वह बीज जो छुप कर बढ़ रहा है उसके दृष्टान्त का रहस्य

**आत्मिक उन्नति और फलवन्त होने के लिए कौन ज़िम्मेदार है?**
**पढ़े -** मरकुस 4:26-29)

**लिख लेः**
**लोगों के लिए बढ़ना या उन्नति करना एक रहस्य है (मरकुस 4:26-27)**
प्राकृतिक रूप से बढ़ना सदा से ही एक रहस्य रहा है। जो भी है चाहे वह पौधो, पेड़ो, जानवरों या फिर मनुष्यों के बढ़ने की बात हो। कोई भी इस बात को सही रीति से समझा नहीं सकता है कि बढ़ना क्यों और कैसा होता है। एक किसान अपने खेत में बीज छितरा देता है यह पूरी तरह से जानते हुए भी कि वह किसी भी तरह से उनको उगा नहीं सकता है। उसका उनके अंकुरित होने, उसके फूट पड़ने, और फल के विकसित होने पर कोई नियन्त्रण नहीं है। और न ही इस पर कि वह फल उत्पन्न करेगा। कई दिन और रात गुज़र जाते हैं जब किसान उस बीज या पौधे के लिए कुछ भी नहीं करता है तौभी वह बीज बढ़ता रहता है। पर वह नहीं जानता है कि कैसे। अपने को आश्वासन देने के लिए वह उन बीजो को ढाँप कर रखता है, उसमें से खत पतवार जैसी चीज़ो को निकाल कर बाहर फेंक देता है। खेत की गुड़ाई करता है और उसमे खाद डालता है और उन पोधों को पानी भी देता है। ये सभी चीज़े बढ़ने को आसान बनाने में सहायक होती हैं पर वे बढ़ने का कारण नहीं होती हैं। किसान को केवल धीरज के साथ इन्तज़ार करना होता है जब तक कटनी का समय नहीं आ जाए। उसे बढ़ने का पूरा काम परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए और उसके भले कार्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

इसी रीति से आत्मिक रूप से बढ़ना भी एक रहस्य है। परमेश्वर ही लेखक है जोलोगों के दिलों में
अपने राज्य का निर्माण कर रहा है। यह उसी की मर्ज़ी के कारण है कि बाइबल के वचनों का बीज लोगों के दिलों और जीवनों पर एक सामर्थी प्रभाव डालता है और इस रीति से वह सामान्य रूप से मानव समाज को भी प्रभावित करता है। (युहन्ना 3:5-8, 1 कुर. 3:5-9)

**बीज की सामर्थी शक्ति (मपकुस 4:28)**
अपने आप से, बिना किसी प्रकट कारण के, और मनुष्य की किसी भी सहायता के बिना ही बीज मिट्टी में उगने लगता है। अपने आप से, बिना किसी मनुष्य की सहायता के बीज अंकुरित हो जाता है, तब तक बढ़ता है जब तक एक पौधे की लम्बी डण्डी बनता है, और अन्त में उसी में दाने निकल आते हैं। ऐसा लगता है मानो परमेश्वर ने एक छोटे से बीज के अन्दर बढ़ने के रहस्य को छुपा दिया है। इस लिए वह जानता है कि अब उसे कब, क्या और कैसे करना है। परमेश्वर उस छोटे से बीज को एक महान सामर्थ और क्षमता दी है।

इसी रीति से परमेश्वर के वचन में भी एक महान सामर्थ निहित है। मसीही लोग हर कोशिश करते हैं कि परमेश्वर के वचन की पहचान की जा सके और हो सके तो उसे जीवन के हर क्षेत्र में माना जा सके जैसे कि अपने परिवार मे, अपनी कलीसिया मे, अपनी सरकार में, अपनी शिक्षा मे, अपने कृषि के क्षेत्र में, अपने व्यापार मे, और बहुमत से अपनी संचार व्यवस्था में वह उसका पालन भी करें। फिर भी मानव सहायता के अतिरिक्त परमेश्वर का वचन जानता है कि क्या, कब और कैसे सब कुछ किया जाए। धीरे-धीरे परमेश्वर का वचन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचता है। और फिर एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र तक और उसकी सामर्थ बहुतायत से अपने प्रभाव को जीवन के हर क्षेत्र में अनुभव कराती है। (1 पतरस 1:23-2:3;प्रेरितो के काम 19:10)

**कटनी का समय अन्तिम विजय का समय होगा (मरकुस 4:29)**
पद 29 शब्दो में कहता है,"जब भी फल या फसल अनुमति देता है, हम तुरन्त हँसिया का प्रयोग करें क्योंकि फसल तो तैयार है।"फसल तैयार होने का वर्णन बड़ा ही नाटकीय है, "तुरन्त", जब कटनी का समय आएगा तब निश्चय ही किसान बिना समय बरबाद किए कटनी करेगा। यह कटु सत्य एक बड़ा ही विश्राम देने वाला और उत्साहित करने वाला सत्य है कि कटनी के समय आने वाला है इसलिए भी उत्साहित करता है कि हम धीरज के साथ कटनी की प्रतीक्षा करें क्योकि जब वह आएगा तब पूरी विजय के साथ आएगा।

इसी रीति से परमेश्वर के राज्यकी योजना भी है और उसे भी इसी रीति से चलाना होगा। परमेश्वर के राज्य का आना रोका नहीं जा सकता है। जैसे बीज अपनी विरासत और नियमों के अनुसार बढ़ता है चाहे किसान उसके लिए कुछ होता देख न सके। वैसे ही परमेश्वर के राज्य का कार्य भी परमेश्वर के नियमों के अनुसार बढ़ता रहता है चाहे हमें दिखाई दे या नहीं। और जिस क्षणपरमेश्वर फैसला कर लेते हैं उसी क्षण परमेश्वर अपने सारे वैभव को प्रकट कर देते हैं। (मत्ती 13:41; प्रकाशितवाक्य 11:15)

**इस दृष्टान्त का संदेश**
आत्मिक उन्नति के लेखक केवल परमेश्वर हैं, मनुष्य नही है अर्थात परमेश्वर के राज्य कि उन्नति की प्रक्रिया जो दिलों में उत्पन्न होकर इस पृथ्वी पर जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों में जीती है। और यह परमेश्वर एक प्रभुता से राजा की तरह करते हैं।

यह दृष्टान्त परमेश्वर के कार्य के प्रति मनुष्य के प्रोत्साहित होने, उसके आदर्शों के विरुद्ध और उसके धैर्य की कमी के विषय में एक चेतावनी है। लोग पूछते हैं, "परमेश्वर इस टूटी और अन्धकार से भरी दुनियाँ में अपने राज्य को पूरी तरह से स्थापित क्यों नहीं करते हैं?"इसका परिणाम अकसर उत्साह रहित, निराशापूर्ण, शक और लगे न रहने और लगातार मेहनत करने में कमी ले आता है। यह दृष्टान्त हमारी निराशापूर्णता को आशापूर्णता, और विश्वासयोग्य आदर्शो में बदल देता है। जब भी हम बीज बोते हैंतब एक न एक दिन कटनी का समय ज़रूर आता है। (यशायाह 55:11) हालाँकि हम बहुत कुछ समझ नहीं पाते हैं, लेकिन परमेश्वर की योजनाएँ और कार्यक्रम कभी भी असफल नहीं हो सकते हैं।

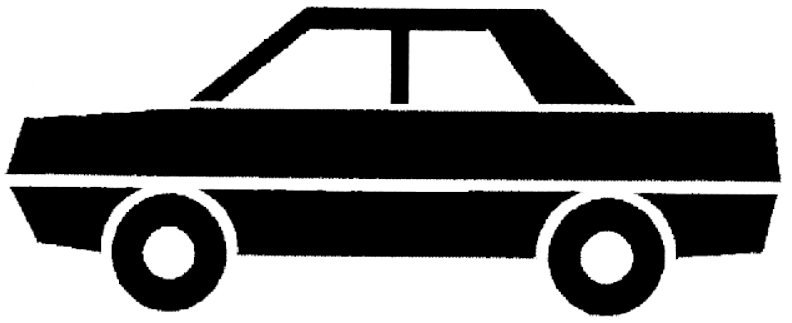
## 3. दोनों दृष्टान्तों के बीच का सम्बन्ध

**शिक्षा ः**
**मनुष्य की ज़िम्मेदारी**
बीज बोने वाले (किसान) का दृष्टान्त आत्मिक उन्नति के लिए मनुष्य की ज़िम्मेदारी पर ज़ोर डालता है। आपके जीवन मे आत्मिक उन्नति का परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि परमेश्वर के वचन के विषय में आप की प्रतिक्रिया क्या है। और यह प्रतिक्रिया परमेश्वर के वचन के प्रति आप के दिल और व्यवहार पर निर्भर करती है।

**परमेश्वर का सर्वसामर्थी होना**
यह दृष्टान्त कि एक बीज रहस्यमय रूप से विकसित होता है इस बात पर ज़ोर देता है कि जहाँ तक बढ़ने का प्रश्न है वहाँ पर परमेश्वर सर्वसामर्थी है। आप नहीं, केवल परमेश्वर पर ही आत्मिक उन्नति के लिए निर्भर रहना ज़रूरी है। वही आपके जीवन में आत्मिक उन्नति को स्थापित करता है वही आपके जीवन में तथा आपके दिल में अपने राज्य को सिद्ध करता है और उसकी उन्नति की प्रक्रिया को जीवन के हर क्षेत्र में सिद्ध करता है। केवल परमेश्वर ही उसका विस्तार कर सकता है। (1 कुर 3:6) यह इस सच को एक तरफ नहीं रखता है कि मसीहों को परमेश्वर के साथ मिल कर काम करना चाहिए जैसे कि बीज बोने वाला और पानी देने वला। (1 कुर. 3:6-9) फिर भी यह दृष्टान्त ज़ोर देता है कि परमेश्वर का सर्वोत्तम काम लोगों के दिलों और उनके जीवनों में होना चाहिए। एक बीज को केवलतभी अंकुरित होता है, बढ़ता है और फलवन्त होता है जब परमेश्वर ऐसा करता है।

## ख. जीवित और मृत चीज़ों में अन्तर

**कार और पेड़ के बीच में क्या अन्तर पाया जाता है?**



**नोट्सः कार**

- मृत है और मरी हुई चीज़ों से बनी है।
- इसे मनुष्य ने रूप देकर बनाया है।
- बाहरी तरीके ने बनाया गया है
- इसके सारे भाग बाहर से जोड़े गए हैं।
- इसका रूप नियत होता है और हज़ारों की गिनती में बनाई जाती हैं।
- इसको बनने में थोड़ा समय लगता है।
- इस के लिए बहुत सा पैसा खर्च होता है।
- यह एक नई कार को जन्म नहीं दे सकती।
- यह समय के साथ पुरानी होकर पड़े-पड़े ज़ंक लग कर व्यर्थ रद्दी बन जाता है।



**नोट्सः पेड़**

- जीवित है और एक जीव के समान बढ़ता है।
- इसे परमेश्वर ने रूप देकर बनाया है।
- लगातार अन्दरुनी बढ़ने के द्वारा बनाया गया है।
- हर भाग लगातार अन्दर से बन कर बढ़ता है।
- हर पेड़ का अपना अलग रूप होता है और उसकी पत्तियाँ विरली होती हैं।
- इसे बनने में बहुत समय लगता है और इसके बढ़ने के स्तर होते हैं।
- इससे बहुत सा पैसा कमाया जा सकता है।
- यह अनेक पेड़ों को जन्म दे सकता है।
- यह स्थिर नहीं रहता या तो बढ़ता रहता है या मर जाता है।

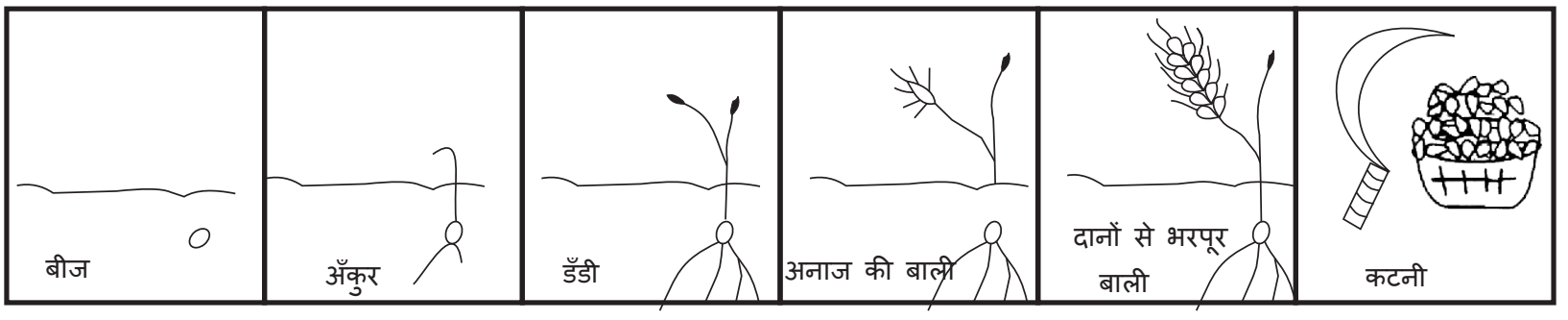
---

## ग. बढ़ने के चरण

### 1. एक पौधे की भौतिक बढ़ोतरी के चरण

**चित्र बनाएँ -** बीज के बढ़ने के हर चरण का चित्र बनाएँ जैसे मरकुस 4:28-29 में वर्णन है।

**बढ़ने के चरणो का चित्रणः**




**शिक्षा देः** एक चरण से दूसरे चरण और फिर अगले चरण की बढ़ने स्थिति बहुत ही क्रम से होती है पर प्रकट में दिखाई नही देती है। एक किसान नहीं बता सकता है कि कब पौधे की पहली लम्बी डाली दिखाई देगी या उसमें से बालें निकलती दिखाई देंगी या फिर हर बाल में पूरी दानों से भरी बालों की पंक्तियाँ देखने को मिलेंगी या नहीं। लेकिन सामान्य परिस्थिति में बढ़ोतरी तो होती ही है। कोई भी चीज़ बढ़ोतरी की प्रक्रिया को रोक नहीं सकती है। शारीरिक रूप

से हर जीवित प्राणी या तो बढ़ता रहता है या फिर मर जाता है। लेकिन वह स्थिर नहीं रह सकता है। पेड़, पौधे, जानवर और मनुष्यों को बढ़ते रहना है नहीं तो वे मर जाएँगे। पर वे एक कार या पत्तर के समान वैसे ही बने नहीं रह सकते हैं। हर जीवित प्राणी बढ़ने के अलग अलग चरणों से होकर गुज़रता है। ऐसे ही आत्मिक रूप से मसीहों को बढ़ना है। वे भी अलग-अलग आत्मिक बढ़ोतरी के चरणों से गुज़रते हैं।

## 2. एक मसीही के बढ़ने के भिन्न चरणः

**एक मसीही के बढ़ने के तीन मुख्य चरण क्या हैं?**
**पढ़ेः** इब्रानियों 5:11 - 6:3
**लिख लेः** लेखक इब्रानी मसीहों को डाँटता है। वह कहता है, हालाँकि वे बहुत सालों से मसीही रहे हैं पर वे विकसित नहीं हुए हैं। उन तीन तरह के मसीहों का वर्णन इस प्रकार दिया गया है।
बच्चे, परिपक्व, और शिक्षक। और उनके अलग-अलग गुण होते हैं।

| बच्चे | परिपक्व | शिक्षक |
|---|---|---|
| पद 11. उनको बाइबल को समझना मुशकिल लगता है।<br>पद 11. वे धीमी चाल से सीखते हैं। प्रोत्साहित करने के लिए समय की, पद और एक बाइबल की ज़रूरत होती है।<br>पद 12. उनको समझने के लिए और विकसित होने के लिए एक शिक्षक की ज़रूरत होती है।<br>पद 12 उन्हे दूध की ज़रूरत होती है (जो बाइबल की सब से आसान शिक्षा है।)<br>पद 13 वे बाइबल की शिक्षाओं से परिचित नहीं होते हैं।<br>पद 14 उनको भले और बुरे की पहचान करनी नहीं आती है। | पद.14 वे अन्न खाने वाले हैं (वे बाइबल को स्वयं के के लिए पढ़ते और उसका, अध्ययन करते हैं।<br>14 वे लगातार बाइबल की शिक्षाओँ का पालन करते हैं।<br>पद 14. वे भले से बुरे को अलग करके देख सकते है। | पद 12 वे बच्चों को शिक्षा दे कर परिपक्व बनाते हैं। |

**एक मसीही के विकास के तीन स्तरों का वर्णन जो कुरन्थियों की पत्री में लिखे हैं क्या हैं?**

**पढ़ेः** 1 कुर. 2:15 - 3:11
**नोट्सः** पौलूस ने कुरन्थियों की कलीसिया को लिखा था कि वास्तव में **आत्मिक** क्या है। 3 भिन्न तरह के मसीहों का वर्णन ऐसे किया है - बच्चे, आत्मिक और कर्मचारी हैं।उन में ये गुण पाए जाते हैः

| बच्चे | आत्मिक (परिपक्व) | कर्मचारी |
|---|---|---|
| पद.1. वे अब भी वैसे ही व्यवहार करते हैं जैसे कि संसार के लोग करते हैं।<br>पद,3. वे ईर्ष्या करते हैं और लड़ते रहते हैं।<br>पद.4. वे अलग-अलग दलों में बँट जाते हैं। | पद.16. वे मसीह के समान सोचते है<br>पद.1. वे धार्मिक और आत्मिक हैं। | पद.5. वे परमेश्वर के सेवक हैं हर एक को परमेश्वर का कार्य सौंपा गया है।<br>पद.6. कुछ सेवक सुसमाचार सुनाते अन्य लोग उनबीजों में पानी दे कर देख-भाल करते हैं। वे प्रभु के खेत की देख भाल |

| | | |
|---|---|---|
| | | करते हैं। और (विकसित होते मसीहों की देख-भाल करते हैं।) पद.10. कुछ सेवक नींव डालते हैं (लोगों को मसीह के पास लाते हैं) अन्य सेवक परमेश्वर के भवन के निर्माण का कार्य करते हैं (विश्वासियों को चेला बना कर परिपक्व बनाना।) |

**युहन्ना के सुसमचार में मसीहों के विकास के कौन से 3 स्तर हैं?**

**पढ़ेः** 1 युहन्ना 2:12-14)

**लिख लेः** युहन्ना विश्वासी बाइयों को लिखता है तीन भिन्न तरह के मसीह है बच्चे, जवान और पिता। और उनमें ये गुण पाए जाते हैं।

| बच्चे | जवान | पिता |
|---|---|---|
| पद 12. वे क्षमा पा चुके हैं।<br>पद 13. वे परमेश्वर पिता को जानते हैं। | पद 14. वे सामर्थी हैं।<br>परमेश्वर का वचन उनके अन्दर रहता है।<br>वे शैतान पर विजय पा चुके हैं। | पद 14. वे लम्बे समय से परमेश्वर को जानते हैं।<br>उनके बच्चे आत्मिक हैं। |

## ग. उन्नति से सम्बन्धित शिक्षाएँ

**1. मसीही उन्नतिः**

हर मसीही के लिए विकसित होना ज़रूरी है। प्रेरित पौलूस, प्रेरित युहन्ना और इब्रानियों के लेखक तीनों ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि एक मसीही का विकास होना आवश्यक है। एक मसीही होना एक प्रक्रिया है केवल एक हैसियत नहीं है। एक मसीही होना पूरे जीवन एक तीर्थयात्री की यात्रा करना है और कहीं पर भी स्थाई रूप से बसना नहीं है। उसकी यात्रा उसके उद्धार से शुरू हो कर एक कतार में चलती जाती है जब तक यीशु दुबारा लौट कर आने के बाद समाप्त होती है।

**एक मसीही की उन्नति के स्तर**

**बाइबल एक मसीही के विकास (उन्नति) के 3 स्तरों के विषय में बताती है।**
1. बच्चे का स्तर ( एक नया विश्वासी)
2. परिपक्व स्तर (एक चेला)
3. एक सेवक का स्तर (कर्मचारी)

कभी-कभी एक मसीही में ये तीनों स्तर एक दूसरे को दबा देती हैं।
**पर मसीही को अगले स्तर के लिए विकसित होना है।**

यदि आप अभी भी यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले एक **नए विश्वासी** है तो आपकोः
1. बाइबल की प्राथमिक शिक्षाओं की (अर्थात आत्मिक दूध की) ज़रूरत है।

2. आपको एक अन्य परिपक्व मसीही की ज़रूरत है जो शिक्षक या सलाहकार बन कर आपकी सहायता कर सके। (शिक्षक या सलाहकार)
3. आपका लक्ष्य कि आप आत्मिक रूप से परिपक्व बन जाएँ और (यीशु मसीह के चेले बन जाएँ)

यदि आप एक **चेले** हैं (अर्थात यीशु मसीह के एक परिपक्व विश्वासी हैं) तो आपः
1. अपने आत्मिक विकास की और व्यवहारिक जीवन की ज़िम्मेदारी लें।
2. आप बाइबल का अध्ययन करें और उसे स्वयं (परमेश्वर के साथअपना निजि समय निकाल कर) अपने जीवन में लागू करें।
3. दूसरे विश्वासियों क साथ भी एक छोटे दल में परमेश्वर के साथ समय बिताएँ।
4. आपका लक्ष्य विकसित हो कर फलवन्त हो कर यीशु मसीह का सेवक बन जाएँ।

यदि आप यीशु मसीह के या उसकी कलीसिया के **सेवक** हैं तो आपः

1. निरन्तर यीशु मसीह का चेले होने के लिए विकसित होते रहें।
2. आप यीशु मसीह में परमेश्वर की सेवा करते रहें और खोए हुओं को सुसमाचार सुना कर जीत लें और इस रीति से बचाए गए लोगों का निर्माण करते रहें।
3. चेल बनाने की शिक्षा प्राप्त करें।
4. आपका लक्ष्य केवल परमेश्वर की महिमा करना और उसके राज्य का विकास करना हो। जिससे दूसरो के जीवन भी फलवन्त होने पाएँ।

---

## घ. निजि मूल्याँकन

**1. प्रार्थना के साथ मूल्याँकन करें।**

चुपचाप निज का मूल्याँकन करें।
इन में से कौन से गुण हैं जो आप में सबसे अधिक दर्शाते हैं?
परमेश्वर इसके लिए आप से क्या करने को कह रहा है?

**प्रार्थना करके एक समर्पण करेः**

यदि आप अभी एक नए विश्वासी हैं तो समर्पण करें कि आप यीशु मसीह के चेले (एक परिपक्व विश्वासी बनेंगे।)
यदि आप एक परिपक्व विश्वासी है तो समर्पण करें कि आप यीशु मसीह के सेवक बनेंगे।
1. आप सुसमाचार सुनाएँगे।
2. आप चेले बनाएँगे और एक दल के अगुवे बनेंगे
3. आप शिक्षा देने के लिए या प्रचार करने के लिए या किसी अन्य सेवा के लिए मसीह की कलीसिया में या परमेश्वर के राज्य के लिए सेवक बन जाएँ

| | | |
|---|---|---|
| **5.** | **प्रार्थना** (8 मिनट) | ***प्रतिक्रियाएँ***<br>**परमेश्वर के वचन के प्रति उत्तर में प्रार्थना** |

दल में बारी-बारी से एक छोटी प्रार्थना करें। उसके लिए जो कुछ भी आज आपने सीखा है।या फिर पूरे दल को 2 या 3 के छोटे दलों में बाँट कर जो भी सीखा है उसके प्रतिउत्तर में प्रार्थना करें।

| 6. | **तैयारी** (2 मिनट) | ***निर्धारित कार्य***<br>**अगले पाठ के लिए** |
|---|---|---|

**दल के अगुवेः** दल के सदस्यों को घर के लिए लिखित में काम दे और सभी सदस्य उसे अपनी कापी में उतार लें।

1.समर्पणः आत्मिक परिपक्वता और फलवन्त होने के लिए स्वयं को समर्पित कर दे।

2.परमेश्वर के साथ निजि समयः युहन्ना4:23 – 7:46 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य के तरीके का इस्तेमाल करें। निजि नोट्स तैयार करें।

3.बाइबल अध्ययनः अगले बाइबल अध्ययन की घर पर ही तैयारी करें।प्रकाशितवाक्य21:1-22:6 इसका विषय है, "मैं कहाँ जा रहा हूँ?"

4. प्रार्थनाः किसी विशेष व्यक्ति या विशेष चीज़ की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करें। (भजन 5:3)

5. अपनी सपताह के नोट्स की कापी को पूरा करेः आपने कितने चेले बनाए हैं, आपके आराधना समय के नोट्स, आपके परमेश्वर के साथ निजि समय के नोट्स, शिक्षा के नोट्स और तैयारी के काम के नोट्स लिख कर पूरे करें।